Edition : March 2022/002

Price : Free

मात्रिका

𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆴𑆑𑆳

MAATRIKA

A CORE SHARADA TEAM FOUNDATION INITIATIVE

REINCARNATION OF THE SHARADA SCRIPT

नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुरवासिनि
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥

𑆤𑆩𑆱𑇀𑆠𑆼 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆼 𑆢𑆼𑆮𑆵 𑆑𑆳𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆥𑆶𑆫𑆮𑆳𑆱𑆴𑆤𑆴
𑆠𑇀𑆮𑆳𑆩𑆲𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑇀𑆡𑆪𑆼 𑆤𑆴𑆠𑇀𑆪𑆁 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆢𑆳𑆤𑆁 𑆖 𑆢𑆼𑆲𑆴 𑆩𑆼𑇆

Contents :-

Page 1

1) Sharada Stortra.
2) Editor's Foreword.

Page 2

1) Khur Kamyuk Devanagari by Prof Santosh Bhan.
2) Lakshmi by Laranya Raina.
3) Shivpanchakshar Stotra.

Page 3

1) Importance of Samskrita language Shridharji.
2) Parts of Body (Hand) in Different langauges.

Page 4

1) Kids Rhyms in Kashmiri.
2) Sharada Varanmala.
3) History of Sharada Lipi by Rakesh Koul
4) Highlights of Year 2021.

Page 5

1) Shiv Ratri Pooja layout and material list.
2) Material list for Shiv Ratri Pooja.

Page 6

1) Sharada Diwas Special by Ketu Ramachandrasekhar.

Page 7

1) Saints of Kashmir - Mata Roop Bhawani by A.K. Razdan.
2) Mata Roop Bhawani Shaloka By Khemlata Ganjoo.

Page 8

1) Artwork for the month on Social media.
2) Donation appeal.
3) Prize winning entries in Sharada Diwas Celebrations.
3) Contact Details.
4)Activity Chart of previous month.

Designed by Sunil Mahnoori
Editor:- Kuldip Dhar
Supporting Editors :- Veronica Peer
Parul Bradu

Editor's Foreword

𑆠𑇀𑆮𑆲𑆴 𑆱𑆳𑆫𑆤𑆵 𑆗𑆶𑆮𑆶 𑆲𑆼𑆫𑆖𑇊 𑆲𑆶𑆁𑆢𑆴 𑆧𑆝𑆴 𑆢𑇀𑆮𑆲𑆶𑆑 𑆲𑆡 𑆲𑆡 𑆩𑆶𑆧𑆳𑆫𑆑𑇅 𑆯𑆁𑆑𑆫 𑆧𑆓𑆮𑆳𑆤 𑆑𑆫𑆴𑆤𑆮𑆶 𑆠𑆶𑆲𑆶𑆁𑆘𑇊 𑆲𑆫 𑆑𑆳𑆁𑆲 𑆩𑆤𑆾𑆑𑆳𑆩𑆤𑆳 𑆥𑆷𑆫𑆶 𑆠𑆶 𑆧𑆼𑆪𑆴 𑆡𑆼𑆮𑆴𑆤𑆮𑆶 𑆒𑇀𑆮𑆯 𑆠𑆶 𑆒𑇀𑆮𑆯𑆳𑆬𑇅

त्वहि सारनी छुवु हेरच़ हुंदि बडि द्वहुक हथ हथ मुबारक। शंकर बगवान करिनव् तुहुंज़ हर कांह मनोकामना पूर् तु बेयि थॅविनव् ख्वश तु ख्वशाल।

आप सबको महाशिवरात्रि की बहुत बहुत बधाई। शंकर भगवान आप की हर एक मनोकामना पूरी करे व आप सबको खुश रखे।

फ़रवरी का माह हमारे लिये बहुत ही व्यस्त रहा। शारदा दिवस का संचालन व समारोह अत्यंत ही सुखद व संतुष्टि देने वाला रहा। को. शा. स.(CST) परस्पर इस प्रयास व प्रयत्न में रहता है कि शारदा लिपी को वह स्थान मिले जिसकी वह योग्य है। हमने अब तक ४५०० से अतिरिक्त विद्यार्थियों को शारदा पडना व लिखना सिखाया है। इस प्रयास में हमारे व हम से जुड़े ३० प्रशिक्षकों ने अपना योगदान दिया। हमारी संस्था यह कार्य निःशुल्क करती है व हमारे साथ जुड़े प्रशिक्षक कोई दक्षिणा प्राप्त नही करते। हमें यह गर्व कि हम इस कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं। हम सदैव प्रयत्नशील रहते हैं कि हम कोई संस्था व पाठशाला एवं विश्वविद्यालय के साथ जुड़ कर शारदा लिपि को लोकप्रिय बना सकें। हम यह प्रयास करते हैं कि इस लिपि को भौगोलिक स्तर पर जितनी जलदी हो सके, मान्यता प्राप्त हो व यह लिपि पुनः प्राथमिक शिक्षा एक भाग बन कर रहे। इस कार्य में हम आप सभी का योगदान व सहमती की आशा करते हैं।

आप सभी को धन्यवाद और शारदा लिपि का समर्थन करें।

𑆑𑆶𑆬𑆢𑆵𑆥 𑆣𑆫
कुलदीप धर
(मुख्य संपादक)

LEARN SHARADA
TEACH SHARADA

संस्कृति और सभ्यता को जानने की एक पहल

PRESERVE-PROTECT - PROPAGATE

ख़ुर कम्युक

By Prof. Santosh Bhan

ख़ुर छु कर्मुक सीता गयि ना बर्
ख़ुर छु दर्मुक द्रौपदी आयि ना अर्।

यि अहिल्या आंस ना पतिव्रता,
इन्द्र करतूत गौतमन दितुनस प्रथा,
ख़ुर छु कर्मुक सीता गयि ना बर्।

स्वहय दिवकी आंस ना बाग्यवान,
ज़नमस छा यिवान सारिनी पान् बगवान,
ख़ुर छु दर्मुक द्रौपदी आयि ना अर्।

यि कौश्लया आंस ना ड्यकबंडा,
कर्मलुनिस प्यठ कनि आयि होडा,
ख़ुर छु कर्मुक सीता गयि ना बर्।

दशरथुसुय आंस्य ना च़ोर गोब्बर,
काल् गटिहेन्ज़ मा रूज़ कांसि ख़बर,
ख़ुर छु दर्मुक द्रौपदी आयि ना अर्।

रामुसुय ह्युह यमि सुय पान् सन्तान,
सुति गोछा रोज़ुन त्रेशि प्रारान,
ख़ुर छु कर्मुक सीता गयि ना बर्।

वटुकन्यनुय ओस राम् नाव तारान,
पान् राम रूद समन्दर बठिस प्रारान,
ख़ुर छु दर्मुक द्रौपदी आयि ना अर्।

योहोय बीश्म् ओस ना ब्रह्मचारी,
कर्मफ़लसुय ब्रोंठ कनि लाचारी,
ख़ुर छु कर्मुक सीता गयि ना बर्।

कर्ण ति ओस ना कुन्ती हुंद सन्तान,
सुय क्याज़ि रूद माजि हंज़ि क्वछि यछान
ख़ुर छु दर्मुक द्रौपदी आयि ना अर्।

बृगु ऋषि चलाव बगवानस लथा,
छ़ेहय बूज़मुच़ पतुवतथ यहय कथा,
ख़ुर छु कर्मुक सीता गयि ना बर्।

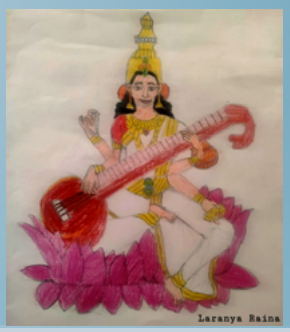

शिव पंचाक्षर स्तोत्र

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय।
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवाय।
शिवाय गौरीवदनाब्जबृंदा
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।
वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमूनीन्द्र
देवार्चिता शेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय।
यज्ञस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय।
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।

॥ संस्कृतभाषायाः गरिमा ॥

By Shridhar Bhat

व्यवहारः भाषाद्वारा एव भवति | भाषां विना स्वस्याभिप्रायं अन्येभ्यः ज्ञापयितुं असमर्थः भवति | भाषारहितं जगत् गाढान्धकारे पतितं भवति | भाषया अस्माकं ज्ञानं वर्धते |

अस्मिन् विश्वे अनेकाः भाषाः सन्ति | तासु संस्कृतभाषा अन्यतमा | संस्कृतस्य देववाणी, गीर्वाणवाणी, सुरभाषा इत्यादीनि नामानि सन्ति | संस्कृत भाषायाः साहित्यं विपुलं,

गम्भीरं, सरसञ्च | न केवलं भारत देशीयाः, विदेशीयाः अपि संस्कृताभ्यासं कुर्वन्ति | संस्कृताध्ययनेन आध्यात्मिकज्ञानम् ,भौतिक विज्ञानम् , उद्योगकला इत्यादि विद्याः मानवजीवननिर्वहणाय प्राप्तुं शक्यते |

आयुर्वेदे आधुनिकवैद्यशास्त्रस्य सर्वे मुख्य-विभागाः अन्तर्भवन्ति | आयुर्वेदे चरकसंहिता,

सुश्रुतसंहिता , अष्टाङ्गहृदयम् इत्यादि प्रसिद्ध ग्रन्थाः संस्कृते एव रचिताः | एतेषु ग्रन्थेषु रोगनिदानम् ,कायचिकित्सा, शस्त्रचिकित्सा इत्यादयः अंशाः सुस्पष्टं वर्णिताः | पतञ्जलेः योगशास्त्रं, मनसः स्वास्थ्यस्य मार्गं दर्शयति |

संस्कृतभाषायां पारलौकिकविषयाः सर्वत्र संदृश्यन्ते | एतस्याः मूलस्रोतः एव आध्यात्मिकविचारः | मानवजीवनस्य सार्थकताप्राप्त्यर्थं आवश्यकाः धार्मिकनैतिकांशाः पुराणेषु, रामायणमहाभारतादिग्रन्थेषु च उपलभ्यन्ते | वेदकालादारभ्य संस्कृते विरचितेषु स्मृत्यादि ग्रन्थेषु राजनैतिक,वैज्ञानिक, भौतरसायन, गणितशास्त्रसम्बद्धाः अनेके विशिष्टाः अंशाः तत्र तत्र दृश्यन्ते |

एवं संस्कृतभाषा मनवस्य न केवलं भौतिकोत्कर्षमधिकृत्य विचारान् प्रस्तौति,अपि तु पारलौकिकीं अभिवृद्धिमपि प्रतिपादयति | अत एव संस्कृतभाषा इहपरकल्याणसाधिका |

भाषासु मुख्या,मधुरा, दिव्या गीर्वाणभारती-संस्कृता ॥

|| 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆨𑆳𑆰𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆓𑆫𑆴𑆩𑆳 ||

𑆮𑇀𑆪𑆮𑆲𑆳𑆫𑆂 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆢𑇀𑆮𑆳𑆫𑆳 𑆍𑆮 𑆨𑆮𑆠𑆴 | 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆁 𑆮𑆴𑆤𑆳 𑆱𑇀𑆮𑆱𑇀𑆪𑆳𑆨𑆴𑆥𑇀𑆫𑆳𑆪𑆁 𑆃𑆤𑇀𑆪𑆼𑆨𑇀𑆪𑆂 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆥𑆪𑆴𑆠𑆶𑆁 𑆃𑆱𑆩𑆫𑇀𑆡𑆂 𑆨𑆮𑆠𑆴 | 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆫𑆲𑆴𑆠𑆁 𑆘𑆓𑆠𑇀 𑆓𑆳𑆝𑆳𑆤𑇀𑆣𑆑𑆳𑆫𑆼 𑆥𑆠𑆴𑆠𑆁 𑆨𑆮𑆠𑆴 | 𑆨𑆳𑆰𑆪𑆳 𑆃𑆱𑇀𑆩𑆳𑆑𑆁 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆁 𑆮𑆫𑇀𑆣𑆠𑆼 |

𑆃𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆼 𑆃𑆤𑆼𑆑𑆳𑆂 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆂 𑆱𑆤𑇀𑆠𑆴 | 𑆠𑆳𑆱𑆶 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆃𑆤𑇀𑆪𑆠𑆩𑆳 | 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆱𑇀𑆪 𑆢𑆼𑆮𑆮𑆳𑆟𑆵, 𑆓𑆵𑆫𑇀𑆮𑆳𑆟𑆮𑆳𑆟𑆵, 𑆱𑆶𑆫𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆵𑆤𑆴 𑆤𑆳𑆩𑆳𑆤𑆴 𑆱𑆤𑇀𑆠𑆴 | 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆱𑆳𑆲𑆴𑆠𑇀𑆪𑆁 𑆮𑆴𑆥𑆶𑆬𑆁,

𑆓𑆩𑇀𑆨𑆵𑆫𑆁, 𑆱𑆫𑆱𑆚𑇀𑆖 | 𑆤 𑆑𑆼𑆮𑆬𑆁 𑆨𑆳𑆫𑆠 𑆢𑆼𑆯𑆵𑆪𑆳𑆂, 𑆮𑆴𑆢𑆼𑆯𑆵𑆪𑆳𑆂 𑆃𑆥𑆴 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆳𑆨𑇀𑆪𑆳𑆱𑆁 𑆑𑆶𑆫𑇀𑆮𑆤𑇀𑆠𑆴 | 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆳𑆣𑇀𑆪𑆪𑆤𑆼𑆤 𑆃𑆳𑆣𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆴𑆑𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆩𑇀 ,𑆨𑆿𑆠𑆴𑆑 𑆮𑆴𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆩𑇀 , 𑆇𑆢𑇀𑆪𑆾𑆓𑆑𑆬𑆳 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆩𑆳𑆤𑆮𑆘𑆵𑆮𑆤𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆲𑆟𑆳𑆪 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠𑆶𑆁 𑆯𑆑𑇀𑆪𑆠𑆼 |

𑆃𑆳𑆪𑆶𑆫𑇀𑆮𑆼𑆢𑆼 𑆃𑆳𑆣𑆶𑆤𑆴𑆑𑆮𑆽𑆢𑇀𑆪𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆼 𑆩𑆶𑆒𑇀𑆪-𑆮𑆴𑆨𑆳𑆓𑆳𑆂 𑆃𑆤𑇀𑆠𑆫𑇀𑆨𑆮𑆤𑇀𑆠𑆴 | 𑆃𑆳𑆪𑆶𑆫𑇀𑆮𑆼𑆢𑆼 𑆖𑆫𑆑𑆱𑆁𑆲𑆴𑆠𑆳,

𑆱𑆶𑆯𑇀𑆫𑆶𑆠𑆱𑆁𑆲𑆴𑆠𑆳 , 𑆃𑆰𑇀𑆛𑆳𑆕𑇀𑆓𑆲𑆸𑆢𑆪𑆩𑇀 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣 𑆓𑇀𑆫𑆤𑇀𑆡𑆳𑆂 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆼 𑆍𑆮 𑆫𑆖𑆴𑆠𑆳𑆂 | 𑆍𑆠𑆼𑆰𑆶 𑆓𑇀𑆫𑆤𑇀𑆡𑆼𑆰𑆶 𑆫𑆾𑆓𑆤𑆴𑆢𑆳𑆤𑆩𑇀 ,𑆑𑆳𑆪𑆖𑆴𑆑𑆴𑆠𑇀𑆱𑆳, 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆖𑆴𑆑𑆴𑆠𑇀𑆱𑆳 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆪𑆂 𑆃𑆁𑆯𑆳𑆂 𑆱𑆶𑆱𑇀𑆥𑆰𑇀𑆛𑆁 𑆮𑆫𑇀𑆟𑆴𑆠𑆳𑆂 | 𑆥𑆠𑆚𑇀𑆘𑆬𑆼𑆂 𑆪𑆾𑆓𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆁, 𑆩𑆤𑆱𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆳𑆱𑇀𑆡𑇀𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆩𑆳𑆫𑇀𑆓𑆁 𑆢𑆫𑇀𑆯𑆪𑆠𑆴 |

𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆨𑆳𑆰𑆳𑆪𑆳𑆁 𑆥𑆳𑆫𑆬𑆿𑆑𑆴𑆑𑆮𑆴𑆰𑆪𑆳𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆠𑇀𑆫 𑆱𑆁𑆢𑆸𑆯𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆼 | 𑆍𑆠𑆱𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆩𑆷𑆬𑆱𑇀𑆫𑆾𑆠𑆂 𑆍𑆮 𑆃𑆳𑆣𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆴𑆑𑆮𑆴𑆖𑆳𑆫𑆂 | 𑆩𑆳𑆤𑆮𑆘𑆵𑆮𑆤𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆳𑆫𑇀𑆡𑆑𑆠𑆳𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠𑇀𑆪𑆫𑇀𑆡𑆁 𑆃𑆳𑆮𑆯𑇀𑆪𑆑𑆳𑆂 𑆣𑆳𑆫𑇀𑆩𑆴𑆑𑆤𑆽𑆠𑆴𑆑𑆳𑆁𑆯𑆳𑆂 𑆥𑆶𑆫𑆳𑆟𑆼𑆰𑆶, 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟𑆩𑆲𑆳𑆨𑆳𑆫𑆠𑆳𑆢𑆴𑆓𑇀𑆫𑆤𑇀𑆡𑆼𑆰𑆶 𑆖 𑆇𑆥𑆬𑆨𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆼 | 𑆮𑆼𑆢𑆑𑆳𑆬𑆳𑆢𑆳𑆫𑆨𑇀𑆪 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆼 𑆮𑆴𑆫𑆖𑆴𑆠𑆼𑆰𑆶 𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴 𑆓𑇀𑆫𑆤𑇀𑆡𑆼𑆰𑆶 𑆫𑆳𑆘𑆤𑆽𑆠𑆴𑆑,𑆮𑆽𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆴𑆑, 𑆨𑆿𑆠𑆫𑆱𑆳𑆪𑆤, 𑆓𑆟𑆴𑆠𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆱𑆩𑇀𑆧𑆢𑇀𑆣𑆳𑆂 𑆃𑆤𑆼𑆑𑆼 𑆮𑆴𑆯𑆴𑆰𑇀𑆛𑆳𑆂 𑆃𑆁𑆯𑆳𑆂 𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆢𑆸𑆯𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆼 |

𑆍𑆮𑆁 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆩𑆤𑆮𑆱𑇀𑆪 𑆤 𑆑𑆼𑆮𑆬𑆁 𑆨𑆿𑆠𑆴𑆑𑆾𑆠𑇀𑆑𑆫𑇀𑆰𑆩𑆣𑆴𑆑𑆸𑆠𑇀𑆪 𑆮𑆴𑆖𑆳𑆫𑆳𑆤𑇀 𑆥𑇀𑆫𑆱𑇀𑆠𑆿𑆠𑆴,𑆃𑆥𑆴 𑆠𑆶 𑆥𑆳𑆫𑆬𑆿𑆑𑆴𑆑𑆵𑆁 𑆃𑆨𑆴𑆮𑆸𑆢𑇀𑆣𑆴𑆩𑆥𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴𑆥𑆳𑆢𑆪𑆠𑆴 | 𑆃𑆠 𑆍𑆮 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆅𑆲𑆥𑆫𑆑𑆬𑇀𑆪𑆳𑆟𑆱𑆳𑆣𑆴𑆑𑆳 |

𑆨𑆳𑆰𑆳𑆱𑆶 𑆩𑆶𑆒𑇀𑆪𑆳,𑆩𑆣𑆶𑆫𑆳, 𑆢𑆴𑆮𑇀𑆪𑆳 𑆓𑆵𑆫𑇀𑆮𑆳𑆟𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵-𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆳 ||

Parts of Body (Hand/ हाथ/ अथ/ 𑆃𑆡)

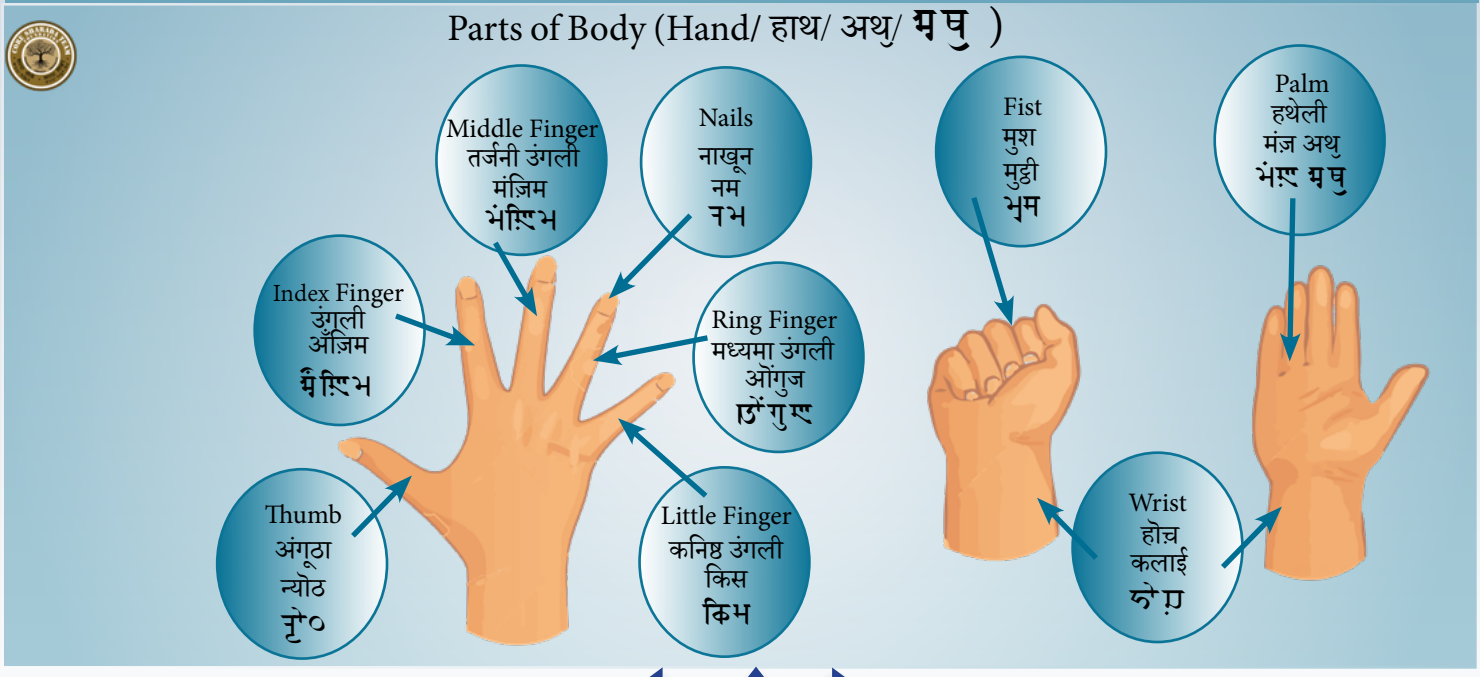

वदवुनि गोबुरो, ओंश मो त्राव
कावन त्रावुय, यकु अड पाव
अंड हन थव चंदस, स्व खे वंदस
अंड हन थव आलिस, स्व खे
यतुकालिस

[illegible]

[illegible] / Highlights of Year - 2021

[illegible]

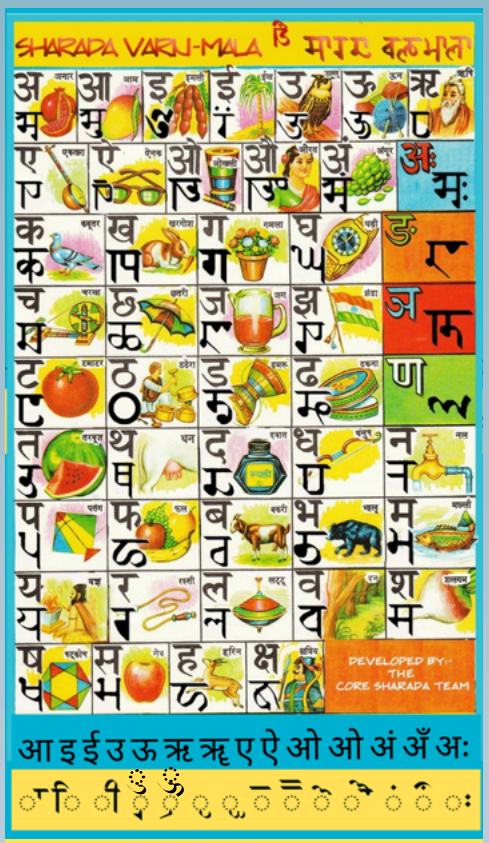

Brief overview of the History of Sharada Script

By Rakesh Kaul

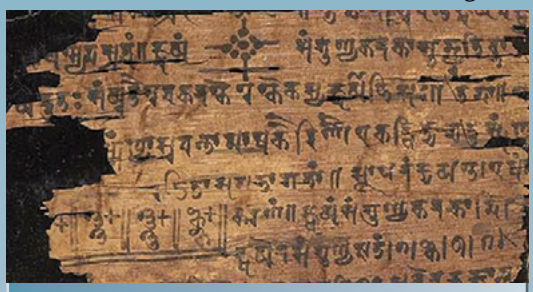

Sharada Lipi traces back to 3rd CE, as per the new evidence that has surfaced up lately. New carbon dating research commissioned by the University of Oxford's Bodleian Libraries into the ancient Indian Bakhshali manuscript, provides evidence that this manuscript can be dated to 3rd CE. Determining the date of the Bakhshali manuscript is of vital importance to the history of mathematics and study of early South Asian culture testifying to the subcontinent's rich and longstanding scientific tradition.

The Bakhshali manuscript uses an early stage of the Sharada script, and therefore, provides earliest record of this script. Thus, Sharada has existed much before Devanagari, but Devanagari has never been replacement for Sharada. Sharada is mother script to Gurumukhi, Landa and Takri scripts. The use of this script was at its prime between 8th and 12th century CE in Kashmir and neighbouring areas. This also happens to be the era when Kashmir was rich culturally and spiritually and was the hub of knowledge. This is the time when Sharada Peeth in Kashmir was a well recognized as a seat of learning and was famous all over India and in the neighbouring countries. Large number of books and scriptures were written in Sharada Script during this time. No wonder, there are an estimated 40,000 manuscripts written in Sharada script, which can be found in various libraries in India, United States, Canada and many European countries. Many must have got destroyed and some may be lying with some householders. These manuscripts are believed to be rich source of knowledge about mathematics, astrology, medicine and philosophy.

With the invasion of Muslim rulers and their establishment in India and particularly in Kashmir, Hindu literature including Sharada script faced a serious on slaughter. The script was forced out of usage and became almost extinct. The general population remained deprived of the knowledge of the script as well as the grand manuscripts that were written in this script. Only a minuscule of Hindu community who continued to use Sharada for writing horoscopes remained knowledgeable about this script.

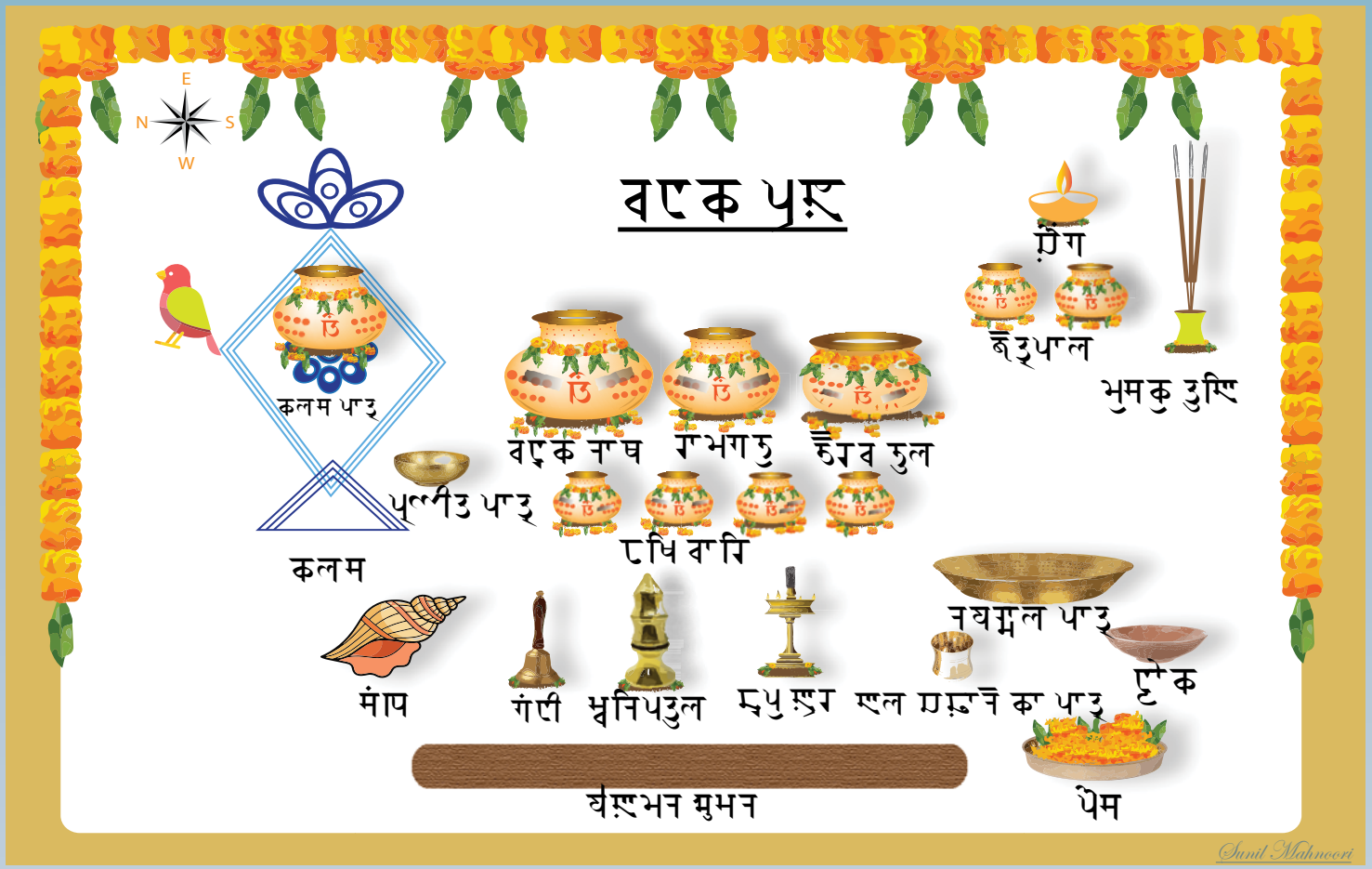

Sunil Mahnoori

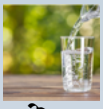

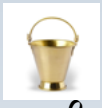

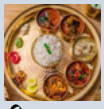

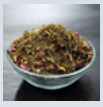

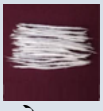

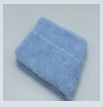

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	*Note:- This list is indicative and not exhaustive depending on family traditions (reet).

By Ketu Ramachandrasekhar

शारद दिवस / Sharada Diwas

Sharada- Devata & Varnamatrka

The script owes its name "Sharada", to the region in which it was most popularly used, which was called Sharadadesha or Sharadamandala a country whose main goddess of worship was Sharada.

Critical Edition of Vijnanabhairava

The critical edition is a method to establish the original text, that may have got transformed during the transmission. A critical edition considers all point of views, doctrinal and semantical. The commentaries sometimes help us to understand the text but sometimes they already imply a vision of a doctrinal school.

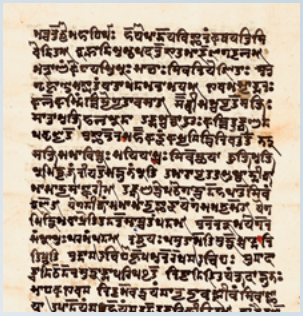

To decide the older version -The general tendency in course of transmission of text is to simplify a difficult word or expression. The difficult reading is more original than the simple reading. Similarly, grammatically irregular forms are more original than the regularised variants

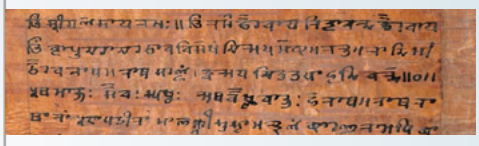

Need for a Critical Edition of Vijnanabhairava

A manuscript preserving an abundance of apparently grammatically correct and doctrinally coherent variants is thus no guarantor of originality. Rather the opposite may be the case.

Emendation and horizontal which is observed in texts like Malinivijayottara which have regionally restricted transmission, instances of emendation would be very high in text like Vijnanabhairava whose transmission is admitted to a vast territory.

समं शल्यौ च मित्ले च - मित्ले or मिले?

While the latter is most commonly used, the former is a rare usage but correct.

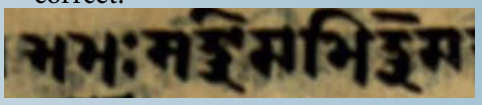

सुखदुखादिसङ्गमम् presence of Jihvamuliya sound.

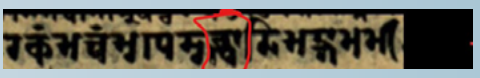

Connection with gloss

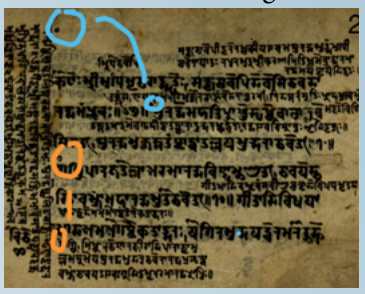

Ellipsis (...) is a notation used in the modern languages. I do not think this scribe has used them. There are few other random dots on this page in the same color which is not the same as ink color.

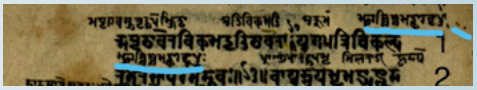

The notes that we come across in many of the MSs have by and large been the abridged versions of certain commentaries. The आनन्दभट्ट's कौमुदी व्याख्यान gives the following explanation on the particular Dharana- कपालकुहरान्तः- शिरःकवाटमध्ये

The usage of the term शिरःकवाटमध्ये is an interesting feature of this commentary. Otherwise in Sivopadhyaya's commentary, we find शिरःकपालमध्ये , and in this, the usage of शिरः and कपाल appears to be a tautology, for the term कपाल is not used for anything other than the skull, hence शिरः does not serve any purpose. Whereas if शिरःकवाटमध्ये is taken, then it would mean the point of entrance/exit in the cranium.

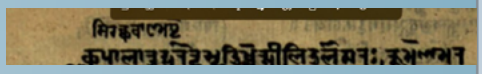

Some Observations:-

- The placement of superscript anusvara and e-matra is occasionally haphazard,
- The ligatures bha and ru are indistinguishable in some MSs.
- The text is revised and corrected both propria and secunda manu,
- Corrections are noted both interlineally and in the margins,
- Insertion points are tagged with standard kakapada (or hamsapada) marks.

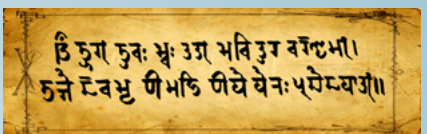

कश्मीर के महान संत

By A.K.Razdan

अलक्षीश्वरी माता रूपभवानी

जेष्ठ पूर्णिमा १६२११ ईस्वी को जगदम्बा शारिका भगवती का अवतरण अपने परमभक्त पण्डित माधवजू धर के घर में उन की बेटी के रूप में हुआ। आलौकिक पुत्री देख कर माधवजू फूले नहीं समाए। दिव्य पुत्री का लालन-पालन पिता ने बड़ी तत्परता से किया और शीघ्र ही बालिका रूपा ने संस्कृत एवं फ़ारसी का अक्षर ज्ञान प्राप्त किया। ५/६ वर्ष की आयु में ही धार्मिक ग्रन्थों एवं त्रिकदर्शन का अध्ययन करने लगी। उस समय की प्रचलित प्रथा के अनुसार उन का विवाह बालावस्था में ही सप्रू प्रिवार के एक बालक से हुआ। ससुराल में सास व पत्ति के दुर्व्यवहार के कारण वैवाहिक जीवन से त्रस्त हो कर १८ वर्ष की आयु में ससुराल का घर त्याग कर वह परम सत्य की खोज की ओर अग्रसर हुई।

माता अलक्षीश्वरी संसार की व्यस्तता से दूर एकांतवास में तपस्या करने के लिए गोपादरी पर्वत की तलहटी में स्थित चशमेसाहिबी पहुँची जहाँ साढ़े बारह वर्ष अघोर साधना करने के पश्चात वह मन्निगाम के पास एक घनें वन में अपना साधना चक्र पूरा करने के लिए चली गई। कुछ समय पश्चात वह एक स्थानीय ब्रह्मण के अनुरोध पर वन की कुट्टिया से निकल कर मन्निगाँव में वास करने लगी। यहाँ से साढ़े बारह वर्ष के अन्तराल के बाद वह नज़दीक ही लार गाँव में एक नहर के पास एक और साढ़े बारह वर्ष का साधना चक्र पूरा करने के लिए वास करने लगी। लार से अन्तिम साधना चक्र पूरा करने के लिए वह वासुकुरा गाँव चली आई। निरन्तर पचास वर्ष ध्यान साधना के पश्चात माता रूपभवानी वासुकुरा से श्रीनगर में अपने पैत्रिक घर लोट आई।

योगसाधना के फलस्वरूप माता अलखिश्वरी ने जीवन्मुक्त हो कर परमयोगिनी का पद प्राप्त कर लिया, जिस का वर्णन वह अपने स्वानुभवोल्लासदशकम् के एक वाक् में करती है......

युगो युगान्तर संन्यास वर्णम

तुरियातीता तथ प्रसिन्दोहम्

अचिन्त्य रूपं परम् आकारम्

स्थिर केवलोहं परंब्रह्म सोहम्॥

शारिका स्वरूपा माता अलखिश्वरी रूपभवानी १०० वर्ष की आयु में माघ कृष्णपक्ष सप्तमी संवत १७२१ ईस्वी को पार्थिव शरीर त्याग कर ब्रहमलीन हुई। उन के द्वारा कहे हुए १४७ वाक् रहस्योपदेश पुस्तक में प्रकाशित हुए हैं।

मातारूपाभवानीश्लोक

By Khemlata Ganjoo

श्रीगुरवेनमोनमः।

सहजसर्वत्रव्यापीस्वहृथ्विचार्यम्।

बहुबलसंबाहुएकतंस्वयंबूपरमाकारी।

अन्तर्मुखीदृष्टीनिर्वानरहस्यततीपरमगती ॥१॥

शुद्युक्तमूलादारीक्वण्डलीमण्डलीगौरी

स्यदृअर्थसूक्ष्मूसुष्वम्नीचक्रविरक्तशान्तादारी।

ईश्वरीतुर्यातीतपरमानन्दी।

अन्तरमुखीदृष्टीनिर्वानरहस्

ततीपरमगती ॥२॥

तद्रूपमयीतत्परमगतीस्थानीप्रवाही।

गतिगट्पूरनीच्छदादेहतृपितं

समर्थस्वामीपरमार्थनिदानम्।

अन्तरमुखीदृष्टीनिर्वानरहस्यततीपरमगती ।३॥

उपनिषद्पारिजाताअख्वय्फल्एक्

अर्थिसदग्वरयोगीअदेहोपुरानम्।

बहुतीज्रवानीसुशीतल्सुदर्शन्

निनायुअग्रायुपरमदीप्प्रसन्नो।

अन्तरमुखीदृष्टीनिर्वानरहस्यततीपरमगती ॥४॥

पवित्रनेत्रपश्यतमुखीअन्तर्

बाहोबहुदनाडीअसंख्यकामकर्त

विहुयराज्ञ्यूगीदातापितासुय

सर्वकांख्यासुअर्थपूरनी

अन्तरमुखीदृष्टीनिर्वान-रहस्यततीपरमगती ॥५॥

DONATE

If you appreciate the efforts by The Core Sharada Team Foundation for the revival of Sharada Script, Kindly Donate generously.

Core Sharada Team Foundation

HDFC Bank,Airport Rd., Bangalure

Account No: 50200054809336

IFSC : HDFC0000075

(RTGS / NEFT)

(Income Tax exemption under 80G)

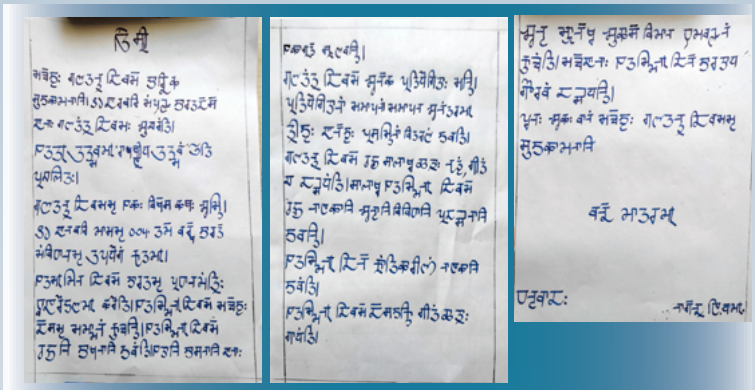

Nagendra T M- 2nd Prize

Sajal Jain - 3rd Prize

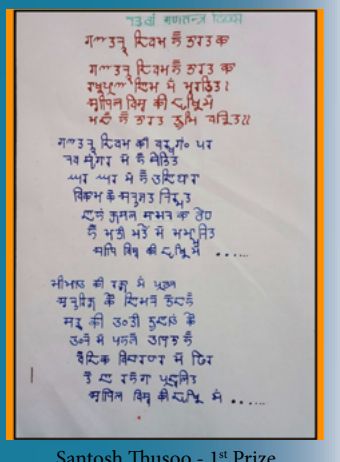

Santosh Thusoo - 1st Prize

Activity Cart Of Previous Month

Free 3-day Online Workshop to Read, Write and Transliterate Sharada Script was conducted by Rakesh Koul and Veronica Peer on 15-16-17 Feb 2022.

This three day sharada workshop had participants from various parts of world including India, Australia, Germany, UK, France, Spain, Finland and many more.

The workshop was designed to help students to read, write and transliterate old Sharada manuscripts by the end of three sessions.

For Learning Sharada or any other suggestions:-

facebook.com/Core-Sharda-Team-110148770831539

instagram.com/coreshardateam

shardalipi.com

twitter.com/CoreSharada

maatrika.cst@gmail.com

Phone - 98301 35616 / 90089 52222